

PMYV आपको से आपनी बात...!



आज हर व्यक्ति स्वयं को पूर्ण या उत्तम मानता है, समस्या तो परिस्थिति वश या दूसरों के कारण ही होती है। स्वयं तो सर्वोत्तम और सभी ज्ञान के ज्ञाता होते हैं, व फिर यह बोलते हैं कि यह तो मुझे पता ही था, यह तो होना ही था।

कोई भी वास्तविकता को जानना नहीं चाहते, अपने अन्दर एक अहंकार को बनाये रखते हैं और यह अहंकार हमें अन्दर से खोखला बना देता है, साथ ही साथ विशेष रूप से अपने आप को, निकटतम को, हमारे परिजनो को कष्ट देता है, और अहंकार का ज्ञान हमें स्वयं कभी नहीं हो सकता, कोई भी नहीं कहेगा कि मैं अहंकारी हूँ, क्योंकि हम स्वयं के लिये तो सबसे सही व उत्तम हैं।

तो फिर हमें अपनी गलतियों का, अपनी भूल का, हमसे हुई चूक का एहसास कैसे होगा? जब हम अपने अहंकार को भूलेंगे व हमसे हुयी गलतियों को सुनने व समझने की शक्ति अपने अन्दर आत्मसात करेंगे। तभी हम स्वयं को जान पायेंगे और अगर सही समय पर हमने अपने अहंकार को नहीं त्यागा व स्वयं का ज्ञान नहीं हुआ तो जीवन भर दूसरों की आकांक्षा व अपनी कामनाओं के बीच पिसते रहेंगे।

स्वयं का ज्ञान, हमारी अक्षमता व कमी का बोध हमें सिर्फ हमारे गुरु ही करा सकते हैं। क्योंकि

गुरु को आपसे कोई स्वार्थ नहीं है, गुरु तो सिर्फ आपको देना चाहते हैं। हम गुरु के दिखाये हुये मार्ग, गुरु की चेतना, ज्ञान, ध्यान से स्वयं को जान कर परिपूर्ण बना सकते हैं।

आप सभी अपनी इस अपूर्णता को समाप्त कर गुरु के ज्ञान व प्रेम से सराबोर हो सके इस हेतु जल्द ही आप सभी व्यक्तिगत रूप से गुरुदेव से मिल कर अपनी समस्याओं का निदान प्राप्त कर सकें इसकी व्यवस्था जल्द ही की जा रही है।

कोविड कि समस्या को देखते हुये व सरकारी निर्देशों का पालन करते हुये 01 से 04 अक्टूबर दिल्ली व 17 से 25 अक्टूबर जोधपुर आश्रम में मिलने की व्यवस्था की जा रही हैं। इस हेतु आश्रम के निश्चित नियमों की पालन के साथ ही आप आश्रम में आ सकते हैं। आपके द्वारा आने से पूर्व इसकी सूचना आश्रम में देने पर आपको समय बताया जायेगा।

सद्गुरुदेव से साधनात्मक मार्ग दर्शन हेतु ही मिलने के इच्छुक साधक साधना, दीक्षा, मंत्र व दिशा निर्देश प्राप्त कर यथा शीघ्र पुनः घर को लौट जाये। यह व्यवस्था आपके सहयोग व धैर्य के बिना संभव नहीं हैं।

आश्रम में किसी भी प्रकार से रात्रिकालीन विश्राम की व्यवस्था नहीं हैं।

आपका अपना
विनीत श्रीमाली